

माननीय राज्यपाल का संबोधन

दिनांक : 07 सितम्बर 2023, गुरुवार

समय : 4.30 PM

स्थान : गुवाहाटी

- इस्कॉन के अध्यक्ष श्री जीवा दास जी,
- इस्कॉन से जुड़े हुए प्रभुजनों
- और यहां उपस्थित भक्तगण

सर्वप्रथम आप सभी को श्री कृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक बधाई। इस पावन अवसर पर इस भव्य इस्कॉन मंदिर में आकर मैं बहुत खुशी हो रही है।

जन्माष्टमी सिर्फ एक त्योहार नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक कला है। भगवान श्रीकृष्ण धर्म, कर्म एवं सच्चाई के प्रतीक हैं। द्वापर युग में धरती पर फैले अन्याय, अत्याचार व अधर्म को मिटाने के लिए उन्होंने इस पवित्र भारतभूमि पर अवतार लिया था। भगवान कृष्ण की शिक्षाएँ हमारे दैनिक जीवन में हमारा मार्गदर्शन करती रहेंगी और हमें बेहतर इंसान बनने में मदद करेंगी।

जन्माष्टमी का पर्व हमें अच्छे कर्मों के लिए प्रेरित करती है। यह बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। सुखी और समृद्ध जीवन जीने के लिए व्यक्ति को भगवान कृष्ण की शिक्षाओं और सुझावों का पालन करना चाहिए।

आइए हम भगवान कृष्ण के मार्ग पर चलने का प्रयास करें और बेहतर व्यक्ति, समाज के बेहतर सदस्य और दुनिया के बेहतर नागरिक बनें। आइए हम अपने जीवन में आशीर्वाद के लिए आभारी होना और अपने आस-पास के सभी लोगों के प्रति दयालु और दयालु होना भी याद रखें।

मुझे बताया गया है कि गुवाहाटी का यह भव्य इस्कॉन मंदिर 1980 की स्थापना की गई थी और 1991 में तत्कालीन राज्यपाल श्री लोकनाथ मिश्रा ने इसका उद्घाटन किया था।

मित्रों,

देश में ही नहीं, विदेशों में भी भगवान कृष्ण की भक्ति की निर्मल धारा बहती है। सदियों से हमारी संस्कृति और धर्म लोगों को जोड़ने का काम करती रही है। कसी भी त्यौहार को देख लें, सभी में एकता और सद्भाव की भावना देखने को मिलेगी। धर्म और संस्कृति ने मिलकर हमारी भारतीयता को विकसित किया है।

यह भारतीय धर्म की विशेषता रही है कि वह जटिलताओं में जकड़ा न रहा और सतत चिंतन की अवधारणा को विकसित होने में सहायक सिद्ध हुआ।

निःसंदेह भारतीय संस्कृति के समग्र विकास में भारत के सभी धर्मों ने अपना-अपना योगदान दिया। इस प्रकार भारत की सामाजिक व्यवस्था धार्मिक एवं सांस्कृतिक होते हुए भी वैज्ञानिक विचारों को हमेशा आत्मसात करती रही। विकास की नई संभावनाओं को संबल प्रदान करती रही। धर्म के मार्गदर्शन में ही भारतीय चिंतन व्यवस्था पनपी और कालांतर में विश्व की चिंतन व्यवस्थाओं और मान्यताओं को प्रभावित करती रही।

समय और तकनीक ने संपर्क और संचार के मामले में दूरियों को कम कर दिया है। ऐसे युग में जो गतिशीलता और आगे बढ़ने की सुविधा प्रदान करता है, विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान के सामान्य दृष्टिकोण के द्वारा आपसी रिश्तों में मजबूती करना और राष्ट्र-निर्माण महत्वपूर्ण है। आपसी समझ और विश्वास भारत की ताकत की नींव है और भारत के सभी नागरिकों को सांस्कृतिक रूप से एकीकृत महसूस करना चाहिए।

अंत में एक बार फिर मैं लोगों को इस पर्व की हार्दिक बधाई देता हूँ और कामना करता हूँ कि भगवान श्री कृष्ण सभी देशवासियों को खुशी और समृद्धि का आशीर्वाद प्रदान करें।

धन्यवाद

जय हिन्द

गुवाहाटी में श्री श्री रुक्मिणी कृष्ण मंदिर सह वैदिक सांस्कृतिक परिसर का इतिहास 1973-74 में इस्कॉन की पहली पहल से मिलता है, जब सभी शैक्षणिक संस्थानों में भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट के वैदिक साहित्य को रखने के उद्देश्य से एक पुस्तकालय पार्टी का दौरा किया गया था। पूर्वोत्तर भारत. पार्टी का नेतृत्व ब्रिटेन के परम पावन प्रभविष्णु स्वामी ने किया।

इस पहल को बहुत सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली, जिसने असम के इस्कॉन के गवर्निंग बॉडी कमिश्नर परम पावन जयपताका स्वामी को असम के हर शहर और गांव में श्रील प्रभुपाद की पुस्तकों को वितरित करने के लिए समर्पित एक यात्रा संकीर्तन पार्टी भेजने के लिए प्रेरित किया। संयुक्त राज्य अमेरिका के महामहिम [दिवंगत] भबाभूति दास के नेतृत्व में एक यात्रा दल उपरोक्त उद्देश्य के लिए असम पहुंचा।

जिस भूमि पर वर्तमान मंदिर खड़ा है, वह भूमि स्वर्गीय गिरिधारीलाल सराफ द्वारा चिह्नित की गई थी। स्वर्गीय अपूर्व राम बरुआ, न्यायमूर्ति हंसारिया और श्री जगदीश चौधरी जैसी उल्लेखनीय हस्तियों ने इस्कॉन मंदिर को पूरा करने के लिए अथक प्रयास किया।

आइए, आज इस पावन अवसर पर, प्रभु श्रीकृष्ण द्वारा दिखाए कर्म-मार्ग पर चलते हुए हम अपने समाज एवं राष्ट्र को और अधिक सशक्त व समृद्ध बनाने का संकल्प करें।